ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-6* July- 2020
Innovation The Research Concept

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता में लोक–पर्वों के विविध पक्ष
Various Aspects of Folk Festivals in Post-Independence Hindi Poetry

Paper Submission: 05/07/2020, Date of Acceptance: 12/07/2020, Date of Publication: 20/07/2020

ऋषिपाल
सह प्राध्यापक एवं अध्यक्ष,
हिन्दी विभाग,
बाबू अनन्त राम जनता महाविद्यालय,
कौल, कैथल (हरियाणा) भारत

सारांश

'लोक' शब्द का सम्बन्ध जन सामान्य से है। 'लोक' शब्द से तात्पर्य ऐसे विषयों से लगाया जा रहा है जिनमें अनेक भाव–रत्न अपने अनपढ़ रूप में अन्तर्निहित हैं जिनका प्रकाशन साहित्य की अनेक विधाओं – गीत, वार्ता, कथा, संगीतादिकों से होता है। 'लोक' एक व्यापक शब्द है, जिसके अन्दर सारी सृष्टि को समाहित किया जा सकता है।

The word 'Lok' is related to the general public. The word 'Lok' refers to the subjects in which many Bhava-gems are embedded in their ignorant form, which are published by many genres of literature - songs, stories, musicals. 'Lok' is a broad term, in which the whole creation can be contained.

मुख्य शब्द : लोक पर्व, साहित्य, लोक जीवन।
Folk Festival, Literature, Folk Life

प्रस्तावना

''कोश के अनुसार, 'लोक' शब्द का अर्थ – संसार, पृथ्वी, मानव, जाति, समाज, प्रथा, समूह, भू–भाग, प्रान्त, निवास स्थान, दिशा, सांसारिक व्यवहार आदि हैं।''[1] साहित्य कोश के अनुसार 'लोक' का अर्थ विश्व का एक विशेष भाग माना गया है, जिसमें स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल तीनों लोक शामिल हैं।[2] आधुनिकता के सन्दर्भ में 'लोक' का अर्थ ग्राम्य या 'जनपदीय' समझा जाता है। परन्तु डॉ॰ हजारी प्रसाद द्विवेदी का कथन है कि 'लोक' शब्द का अर्थ 'जनपद' या ग्राम्य नहीं है, बल्कि नगरों और गांवों में फैली हुई वह सम्पूर्ण जनता है, जिनको व्यवहारिक ज्ञान का आधार नहीं है। ये लोग नगर में परिष्कृत, सम्पन्न तथा सुसंस्कृत समझे जाने वाले लोगों की अपेक्षा अधिक सरल और अकृत्रिम जीवन के अभ्यस्त होते हैं। परिष्कृत रुचि वाले लोगों की समूची विलासिता और सुकुमारता को जीवित रखने के लिए जो भी वस्तुएँ आवश्यक होती हैं, उनको उत्पन्न करते हैं।[3] 'लोक' शब्द अंग्रेजी के शब्द 'फोक' का पर्याय माना जाता है। अतः हम कह सकते हैं कि 'लोक' शब्द का मतलब है – आम लोगों का वर्ग, जिसमें पृथ्वी के किसी भी हिस्से पर बसने वाले वे लोग समाहित हैं जो शहरी जीवन, शिक्षा, सम्पन्नता आदि से दूर स्वाभाविक ढंग से ग्रामीण अंचल में बहुत ही सादा, स्वाभाविक, सरल एवं स्वच्छन्द जीवन यापन करते हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता में लोक–पर्वों के विविध पक्षों का अध्ययन करना है।

विषय विस्तार

समाज, संस्कृति एवं प्रकृति लोक जीवन को प्रभावित करते हैं, इसी संदर्भ में आदिकाल से ही लोक पर्वों का सम्बन्ध कृषि[4] तथा ऋतु[5] परिवर्तन से रहा है। आदमी अपनी मेहनत से उगाई गई खेती को लहलहाते हुए देखकर प्रफुल्लित, उमंगित एवं उल्लासित होता है। अपनी खुशी एवं उमंग को प्रकट करने के लिए लोगों के समूह में मनोरंजन का आयोजन करता है। सभी के साथ खुशी मनाते हुए नाचता–गाता है। इसी प्रकार का उत्सव ही लोक पर्वो का रूप धारण कर जाता है। इसके अलावा कुछ उत्सव व मनोरंजन इस प्रकार के भी होते हैं जो न तो खेती से सम्बन्धित होते हैं, न ही ऋतु से सम्बन्धित होते हैं बल्कि दैनिक शक्तियों को आकर्षित एवं मुग्ध करने की दृष्टि से किए जाते हैं। वैसे देखा जाए तो भारत देश में हिन्दुओं के मुख्यतः पर्व होली, दिवाली एवं दशहरा का सम्बन्ध मुख्यतः खेती तथा ऋतु के बदलने से ही होता है। होली की

जब हम बात करते हैं तो ऋतु की दृष्टि से, सर्दी लगभग समाप्त हो जाती है और किसान की खेती भी पककर तैयार होती नजर आती है। अपनी वर्ष भर की मेहनत के कारण लहलहाती हुई फसल की खुशी के कारण किसान आत्मविभोर होकर उल्लास से होली खेलता है। ऐसा भी नहीं है दूसरी ओर होली के पर्व का मनाने की एक अन्य पारम्परिक कथा की धार्मिक रूप से मान्यता भी है। वर्षा–ऋतु के उपरान्त दशहरे के त्यौहार के उपलक्ष्य में कृषक खेत में पकी अपनी फसल को देखकर उमंगित एवं उल्लासित होकर घरों की रंगाई, पुताई, मरम्मत आदि करा कर त्यौहार की खुशी मनाता है। इसी प्रकार दीपावली के अवसर पर सर्दी का आगमन हो जाता है। लगभग खेती पक जाती है। उसे काटने के उपरान्त किसान बुआई व जुताई कर खुशी से लक्ष्मी की पूजा, अर्चना करता है, इसलिए कि उसके घर में सुख–समृद्धि बनी रहे व आने वाली फसल भी अच्छी हो।

भारतीय लोक जीवन में प्राचीनकाल से मनुष्य नाग, नदियों, पर्वतों व पेड़ों को दैविक शक्तियाँ समझकर उनकी पूजा करता रहा है। इसका कारण यह था कि इनसे उसको अपने दैनिक जीवन में लाभ–हानि, सुख–दुःख व खेती के नुकसान का डर सताता था। वैसे तो ये त्यौहार सांस्कृतिक विरासत में प्राप्त मूल्यों के टकराव से पैदा हुए थे। इसलिए ये समस्त पर्व लोक–जीवन के रहन–सहन के ढंग का ब्यौरा देते हैं। यही कारण है कि ये पर्व हमारी संस्कृति की निधि माने जाते हैं। वैसे देखें तो वर्तमान दौर में दशहरा, दीपावली, होली आदि पर्वों के बारे में हमारी धारणाओं में काफी बदलाव आया है। ऋतु, प्राकृतिक उपादानों और दैविक शक्तियों के नाम पर लोकपर्वों की जो परम्परा हमारे देश में विकसित हुई उसका एक लम्बा क्रमबद्ध इतिहास है। ये पर्व अचानक शुरू नहीं हुए। वैसे देखा जाए तो भक्तिकाल के उपरान्त सांस्कृतिक पुनरुत्थान की जो लहर भारत में पैदा हुई उसके प्रभाव से नई परम्पराएँ तो पैदा हुई ही दूसरा पुरानी मान्यताओं को भी नया स्वरूप प्राप्त हुआ। लोकपर्वों को इस स्वरूप से काफी बल मिला। भारत बहुभाषी देश है। यहां सभी जातियों, धर्मों एवं वर्गों के लोग रहते हैं। शायद ही संसार में किसी भी देश को भारत के समान बहु–ऋतुओं का देश होने का गौरव प्राप्त हो। प्रतिवर्ष यथा समय देश के प्रत्येक भागों में वर्षा, शरद, शिशिर, हेमन्त, बसन्त और ग्रीष्म ऋतु आती हैं। बसन्त ऋतु समस्त ऋतुओं में सबसे मनमोहक, दिव्य, मनोहर एवं आकर्षक फूल है। इसी कारण से बसन्त ऋतु को हमारे देश में ऋतुराज कहा जाता है। बसन्त को हम अनेकों नामों जैसे मधुमास, माधव, कुसुमाकर, मधुऋतु व ऋतुराज आदि नामों से पुकारते हैं। वास्तव में बसन्त जनमानस में मधुर आवेगों–संवेगों की सृष्टि करके उसे इतना अधिक उमंगित कर देती है कि सारी प्रकृति जड़ और चेतन एक ही अनुराग में रंगे हुए दिखाई देते हैं। ऐसे पावन अवसर पर सारा चराचर एक ही ताल पर नाचता हुआ दिखाई पड़ता है – यौवन की उमड़ती हुई यमुनाएँ, फन–मणि की गुथी हुई लहर कलियाँ, रस रंग में बौरी हुई राधाएँ, रस रंग में भाती हुई कामिनियाँ, फिर लायी बसन्त। उन्मत बसन्त आया।[6]

बसन्त ऋतु के आगमन पर कृषक अपने पुष्पित खेत, खलिहान को देखकर खुश होता है। वहीं दूसरी ओर बसन्त ऋतु के आगमन पर प्रकृति भी अनेक रंगों में रंग कर एवं फूलों से लद जाती है। फूलों से सजी प्रकृति ऐसी प्रतीत होती है मानो कोई नई नवेली दुल्हन सुन्दर वस्त्र धारण करके आभूषणों से सुसज्जित होकर आई हो। ऐसे दृश्य का बड़ा ही सुन्दर उल्लेख 'मानवेन्द्र' में दिखाई पड़ता है – कोयल कूक उठी आमों पर, कली–कली ने गाया। सरसों के स्वर्णिम फूलों में ऋतु का राजा आया। मानो प्रकृति परी ने छम–छम, नूतन गहने पहने। ऋतु रानी बसन्त अलबेली, अरि तेरे क्या कहने।[7]

भारत देश में आश्विन शुक्ला पूर्णिमा को शरद–पूर्णिमा कहते हैं। इस दिन भगवान श्री कृष्ण जी ने गोपियों के साथ रासलीला करके कामदेव का मान–मर्दन किया था। इस दिन रात्रि को चन्द्रमा की रोशनी में खीर बनाकर सेवन करने से और श्रद्धानुसार दान–पुण्य और ईश्वर–भजन करने से रोग व शोकों का सर्वथा नाश होकर सुख–स्वर्ग की प्राप्ति होती है।[8] भारतीय लोक जीवन में सब लोगों का प्रिय त्यौहार कार्तिक पूर्णिमा का होता है। मानो प्रकृति स्वयं ही सम्पूर्ण देश को प्रकाश से जगमगा देती है। 'संशय की एक रात में' इसका वर्णन नरेश मेहता ने अपनी कविता में किया है – पूर्णिमा का यह जनप्रिय पर्व, चेतना संयोजित हो नव्य, रूप रंग से छन कर मौन, विचरती हो जन भू पर भव्य।[9]

मकर संक्रान्ति का त्यौहार सूर्य के उत्तरायण होने के दिन सम्पन्न होता है। मूलरूप से यह ऋतु सम्बन्धी पर्व है, परन्तु लोक–जीवन में इसका अत्याधिक महत्त्व है। इस दिन लोग खिचड़ी खाते हैं। मकर संक्रान्ति के उपलक्ष्य में भाभी ननद को सकरांत देती है अर्थात ननद के लिए कपड़े, फल, मिष्ठान, तिल, दाल और चावल का उपहार भेजती है।[10] इस दिन गंगा तट पर जगह–जगह मेले लगते हैं। लोग गंगा स्नान करते हैं – संक्रान्ति के रोज गंगा तट पर जगह–जगह मेले लगते हैं। लोग शरीर और आत्मा की शुद्धि के लिए गंगा स्नान करते हैं। वे गंगा माँ से याचना करते हैं, आए माता मंगता यह पुत्र कर बद्ध, रहे तन–मन प्राण तेरे प्रति सदैव अनन्य।[11]

इसी प्रकार बसन्त पंचमी माघ शुक्ल पंचमी को मनाया जाने वाला लोक पर्व है, जो ऋतु परिवर्तन से सम्बन्धित है, क्योंकि बसन्त से ही होली आगमन के उपलक्ष्य में गाने बजाने होने लग जाते हैं। इसीलिए होली तथा बसन्त पंचमी के वर्णन बहुत कुछ मिल जुल जाते हैं। बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' अपनी कविता 'हम विष पायी जन्म के' में बसंत पंचमी का वर्णन करते हैं – आई है आज बसन्त पंचमी। चलो प्रिया पूजा को। अत्यन्त प्यार गुलाल लगाकर, नया केसर चल लगा।[12]

भारतीय संस्कृति अत्यन्त प्राचीन, व्यापक एवं उदार संस्कृति है। निश्चित ही राम के आदर्श एवं उदात्त चरित्र ने इस संस्कृति को प्रभावित किया है। राम का व्यक्तित्व अधर्म पर धर्म की विजय का प्रतीक है। राम की जीत और रावण की हार को केन्द्र में रखकर दशहरे का त्यौहार मनाया जाता है। राम जब लंका को जीत कर अयोध्या वापिस आए तो उनके स्वागत में नगर वासियों ने

दीपक जलाए जो दीपावली त्यौहार के रूप में हर्षोल्लास के साथ प्रति वर्ष मनाया जाता है। इसी प्रकार होली का त्यौहार भक्त प्रहलाद की आस्था और विश्वास का प्रतीक है। होलिका जल गयी और प्रहलाद बच गया। इसी की याद में होली का त्यौहार मनाया जाता है। सांस्कृतिक पर्वों में गंगा सप्तमी के पर्व का भी हमारे समाज में बहुत महत्त्व है। गंगा भारतीय संस्कृति का आधार स्तम्भ है। मान्यता यह है कि गंगा पापों को दूर करने वाली और व्यक्ति की मन आत्मा को शुद्ध करने वाली नदी रूपी देवी है। इस प्रकार ये सभी पर्व हमारी सांस्कृतिक चेतना से जुड़े पर्व हैं। भारतीय समाज में दीपावली के अवसर पर दीपक जलाकर घर में गणेश और लक्ष्मी की मिट्टी की बनी प्रतिमा को स्थापित कर उनकी पूजा की जाती है। जिस घर में यह प्रतिमा स्थापित होती है उसमें रात भर घी का दीपक जलता है तथा इस घर का दरवाजा खुला छोड़ दिया जाता है। जनता का विश्वास है कि ऐसा करने से लक्ष्मी का घर में आगमन होता है।[13] भारतीय समाज में दीपावली के पावन अवसर पर लक्ष्मी पूजन होता है, उसके बाद खील–खिलौनों को बांटने की प्रथा है। दीपावली के पावन अवसर की झलक शिव मंगल सिंह 'सुमन' की कविता में साक्षात दिखाई देती है – भरे पूरों के घर में, लक्ष्मी पूजन के सामान जुटेंगे। रजत–स्वर्ण की चकाचौंध में, खील बंटेगी, फूल लुटेंगे। छाई होगी गृह पथ आंगन में जगमग उजियाला, फिर आ गई दीवाली।[14]

भारतीय समाज में होली हिन्दुओं का सर्वाधिक प्रचलित तथा लोकप्रिय त्यौहार है। इस दिन लोग आनन्द और उत्सव मनाते और मस्त घूमते हैं। प्रायः देखने में आता है कि हमारे समाज में होली के आगमन के कारण लोग खुशी से ढोल, गीत आदि बजाकर पावन पर्व का अभिनन्नद करते हैं – जबकि होली पास आती, सरसराती घास गाती। और महुए से लपकती, मस्त करती बास जाती। गूंज उठते ढोल इनके, गीत इनके गोल इनके।[15]

गंगा सप्तमी के दिन गंगा में स्नान करना पवित्र माना जाता है। यह पर्व शुक्ल सप्तमी को मनाया जाता है। गंगा सप्तमी के दिन गंगा स्नान कर, सहस्त्र बार गंगा नाम जपने से पुण्य की प्राप्ति होती है। भागीरथी महाकाव्य में भागीरथ गंगा को लाने के लिए वर्षों तपस्या करते हैं – वर्षों बीत गये गंगा को, भू परिक्रमा करते करते, तप लवलीन उधर भगीरथ, गंगा गंगा जपते जपते।[16]

इसके अतिरिक्त भारतीय समाज में सामाजिक पर्वों की भी बहुत लोकप्रियता है। भारतीय समाज के लोग अपने जीवन में रक्षा बन्धन, गोवर्धन महोत्सव, अक्षय तृतीया, नाग पंचमी और पितृ पक्ष जैसे उत्सवों को श्रद्धापूर्वक मनाकर जीवन में आनन्द लेते हैं इतिहासकारों का अनुमान है कि मध्य युग में मुसलमानों के अत्याचारों से विकल बहिनों ने भाइयों के हाथों में अपनी रक्षा सूत्र बांधना आरम्भ कर दिया था।[17] रक्षा बन्धन पर बहन–भाई को केवल मात्र दो कच्चे धागे बांधती हैं, लेकिन उन धागों में भाई का प्रेम बंधा होता है, भाई प्रण लेता है कि वह अपनी बहन की हर विपति में रक्षा करेगा – रक्षा बन्धन बांचता धागों का मधुमास। बांधे कलाई दे रहा रक्षा का विश्वास।[18]

गोवर्द्धन पर्व कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष में मनाया जाता है। इसे गोवर्द्धन, गोधन, गोबरधन आदि नामों से पुकारा जाता है। विशेष रूप से गोवर्द्धन अहीरों तथा पशु–पक्षियों का पर्व है। इस पर्व के पावन अवसर पर जितने प्रकार के पकवान, व्यंजन, मिठाई, फल, मेवा आदि जुटाए जाते हैं उतने सम्भवतः और किसी दूसरे त्यौहार पर नहीं जुटाए जाते।[19] भारतीय समाज में इस प्रकार की धारणा है कि बैशाख शुक्ल तृतीया को किए दान, परोपकार आदि का पुण्य कभी नष्ट नहीं होता इसलिए इसे 'अक्षय तृतीया' कहते हैं। इसका उल्लेख कवि स्पष्ट करते हुए लिखते हैं कि – सुकृत जौ न यामे करे सो सब अक्षय, उसको अक्षय तीज नाम सब कहते।[20]

श्रावण शुक्ला पंचमी को नाग पंचमी कहते हैं। इस दिन शेषनाग की पूजा की जाती है। नाग पंचमी के दिन नागों को दूध पिलाने की प्रथा है – अब की जैसी नाग पंचमी कभी न आई। नागराज को दूध पिलाओ, जीवन की जय, जीत मनाओ।[21] भारतीय संस्कृति में आश्विन कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा से लेकर अमावस्या तक पितर पक्ष कहलाता है। वेद, शास्त्र, पुराण और स्मृतियों में विस्तार से मनुष्य को यह संदेश दिया है कि वह आश्विन कृष्ण पक्ष में संयम में रहकर किसी प्राणी के चित को न दुखाए, काम–क्रोध, मद, लोभ और मोह का सर्वथा त्याग करते हुए सबका आदर सत्कार करे, सदा सत्य भाषण करे, सदा स्वच्छ रहे, अपने पितरों की संगति की इच्छा करे और भूखों–नंगों को भोजन वसन देकर उनसे आशीर्वाद ग्रहण करें तथा परमेश्वर में चित लगाकर परिवार सहित अपने पितरों के पापों की क्षमा याचना करे। भारतीय समाज में लोक–विश्वास है कि इन दिनों में पिण्ड दान करने से पितरगणों को सम्पूर्ण सुख प्राप्त होता है। प्रभाकर माचवे के शब्दों में – भूखे प्यासे भिख–मंगों को, भोजन–पान मिले सब ठौर, काढ़े ग्रास गऊ माता के, कुकुर–कौर और का गौर, जो कुल–दीपक जाय गया में, देकर पिण्ड करें जल दान, उनके पितर महा सुख भोगे, कर फलगू का पानी पान।[22]

निष्कर्ष

सारांशतः हम कह सकते हैं कि भारतीय लोक जीवन लोक पर्वों और त्यौहारों का जीवन है। भारतीय समाज में कुछ पर्व पकृति से आस्था के कारण मनाये जाते हैं, कुछ पर्व सांस्कृतिक चेतना से मनाये जाते हैं तो कुछ सामाजिक महत्त्व के कारण मनाये जाते हैं। बसंत ऋतुराज है। क्योंकि इसमें प्रकृति का रूप परिवर्तित होता है। प्रकृति अपने पुराने पत्तों को त्याग कर नये पत्तों को धारण करती है। शरद पूर्णिमा के दिन भगवान श्री कृष्ण ने गोपियों के साथ रास लीला करके कामदेव का काम–मर्दन किया था। भारतीय पर्वों को मनाने की एक बड़ी विशेषता यह भी है कि लोग त्यौहारों को मनाते समय ऊंच–नीच, छोटे–बड़े का अन्तर भूल जाते हैं। जीवन के सभी गिले–शिकवे भूलकर मिलकर होली, दिवाली आदि पर्व बड़े उल्लास के साथ मनाते हैं। सामाजिक पर्वों में रक्षा–बन्धन का त्यौहार भाई–बहन के पवित्र रिश्ते का प्रतीक है। इसी प्रकार अक्षय तृतीया महाऋषि परशुराम के जन्म से सम्बन्धित त्यौहार है। इस उत्सव पर लोग गंगा स्नान करते हैं। नाग पंचमी के दिन

नाग की पूजा की जाती है। पितर पक्ष के उपलक्ष्य में लोग गरीबों को दान देते हैं। यह पितरों की सद्गति और व्यक्ति के स्वयं के अपने कल्याण के लिए मनाया जाता है। इस प्रकार उपरोक्त विवेचन के आधार पर हम कह सकते हैं कि स्वातन्त्रयोत्तर हिन्दी कविता लोक–पर्वों से ओत–प्रोत है। किसी न किसी सन्दर्भ में अनेकों बार लोक पर्वों का उल्लेख स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता में मिलता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *सम्पादक, मुकुन्दी लाल श्रीवास्तव तथा अन्य, वृहत हिन्दी कोश, पृ॰ 1200*
2. *सं. धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दी साहित्य कोश, पृ॰ 747*
3. *ऋग्वेद, 3/53/12*
4. *"AgriculturalOperations are associated with a series of Festival" Encyclopaedia of Social Science, Vol. VI, P. 198*
5. *Encyclopaedia of Religion and Ethics V.P. 869*
6. *शमशेर बहादुर, टूटी हुई बिखरी हुई, पृ॰ 140*
7. *रघुवीर शरण 'मित्र' मानवेन्द्र पृ॰ 86*
8. *योगेन्द्र गर्ग, हिन्दुओं के व्रत एवं त्यौहार पृ॰ 159*
9. *नरेश मेहता, संशय की एक रात, पृ॰ 87*
10. *डॉ॰ रत्नचंद्र शर्मा, मुगलकालीन सगुण भक्ति काव्य का सांस्कृतिक विश्लेषण, पृ॰ 272*
11. *भवानी प्रसाद मिश्र, तब, और आगे, पृ॰ 12*
12. *बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' हम विषपायी जन्म के, पृ॰ 07*
13. *कृष्ण देव उपाध्याय, लोक संस्कृति की रूपरेखा, पृ॰ 169*
14. *शिव मंगल सिंह 'सुमन' विश्वास बढ़ता ही गया, पृ॰ 31*
15. *भवानी प्रसाद मिश्र, दूसरा सप्तक, पृ॰ 11*
16. *सरूप सैलानी, भागीरथ, पृ॰ 94*
17. *डॉ॰ रत्नचन्द्र शर्मा, सगुण भक्ति काव्य का सांस्कृतिक विश्लेषण, पृ॰ 272*
18. *डॉ॰ सारस्वत मोहन 'मनीषी' सतसई, पृ॰ 119*
19. *कृष्ण देव 'उपाध्याय' लोक संस्कृति की रूपरेखा, पृ॰ 164*
20. *प्रभाकर माचवे, अनुक्षण, पृ॰ 56*
21. *केदारनाथ अग्रवाल, हे मेरी तुम, पृ॰ 26*
22. *प्रभाकर माचवे, अनुक्षण, पृ॰ 37*